सचित्र बाल कथाएँ

प्रेरक कहानियाँ

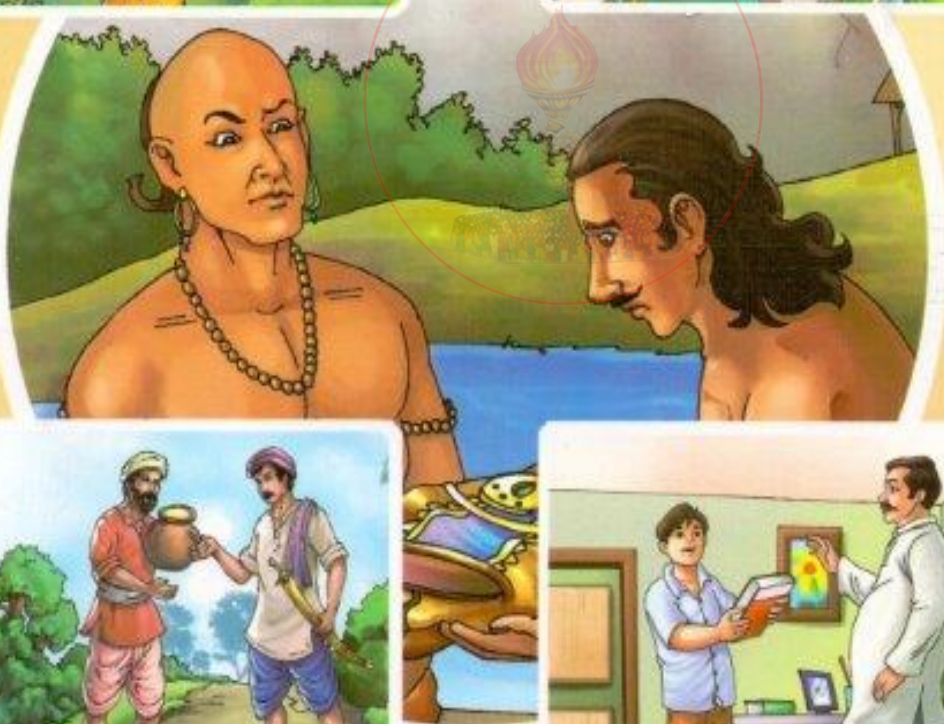

14

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

बालक की बहादुरी

हालैंड की पुरानी घटना है। नदी की बाढ़ से रेल का पुल टूट गया। गाड़ी आने का समय हो गया। पुल के टूटने की जानकारी न होने से वह चली आती तो बड़ी दुर्घटना होती। एक छोटा लड़का वहाँ मौजूद था। आने वाली गाड़ी को रोकने के लिए उसने तुरंत उपाय सोच लिया। उसने कुर्ता फाड़कर झंडी बनाई। भुजा काटकर खून निकाला और उसे लाल रंग लिया। अब वह पटरी पर लकड़ी में लाल झंडा फहराता हुआ खड़ा था। गाड़ी चली आती तो उसकी जान जोखिम का खतरा भी था। पर उसने उसकी परवाह न की।

ड्राइवर ने लड़के को खड़ा देख लिया। गाड़ी रोकी। दुर्घटना रुकी। गाड़ी वापस लौटी। उस लड़के का नाम था जॉर्ज स्टेनले। प्रत्येक व्यक्ति उसके साहस और बुद्धि की प्रशंसा कर रहा था। छोटे बालक की सूझ-बूझ से अनेक व्यक्तियों के प्राण बचे थे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सियार का मुकदमा

एक बकरी थी, उसके पास खेत था और एक सियार के पास तालाब था। उस सियार ने अपना तालाब बकरी को बेच दिया और खेत बकरी से ले लिया।

दूसरे दिन सियार बोला—"ऐ बकरी! तालाब का पानी नहीं पीने दूँगा क्योंकि मैंने तालाब बेचा है पानी नहीं बेचा है।" दोनों शेर राजा के पास फैसला कराने के लिए गए।

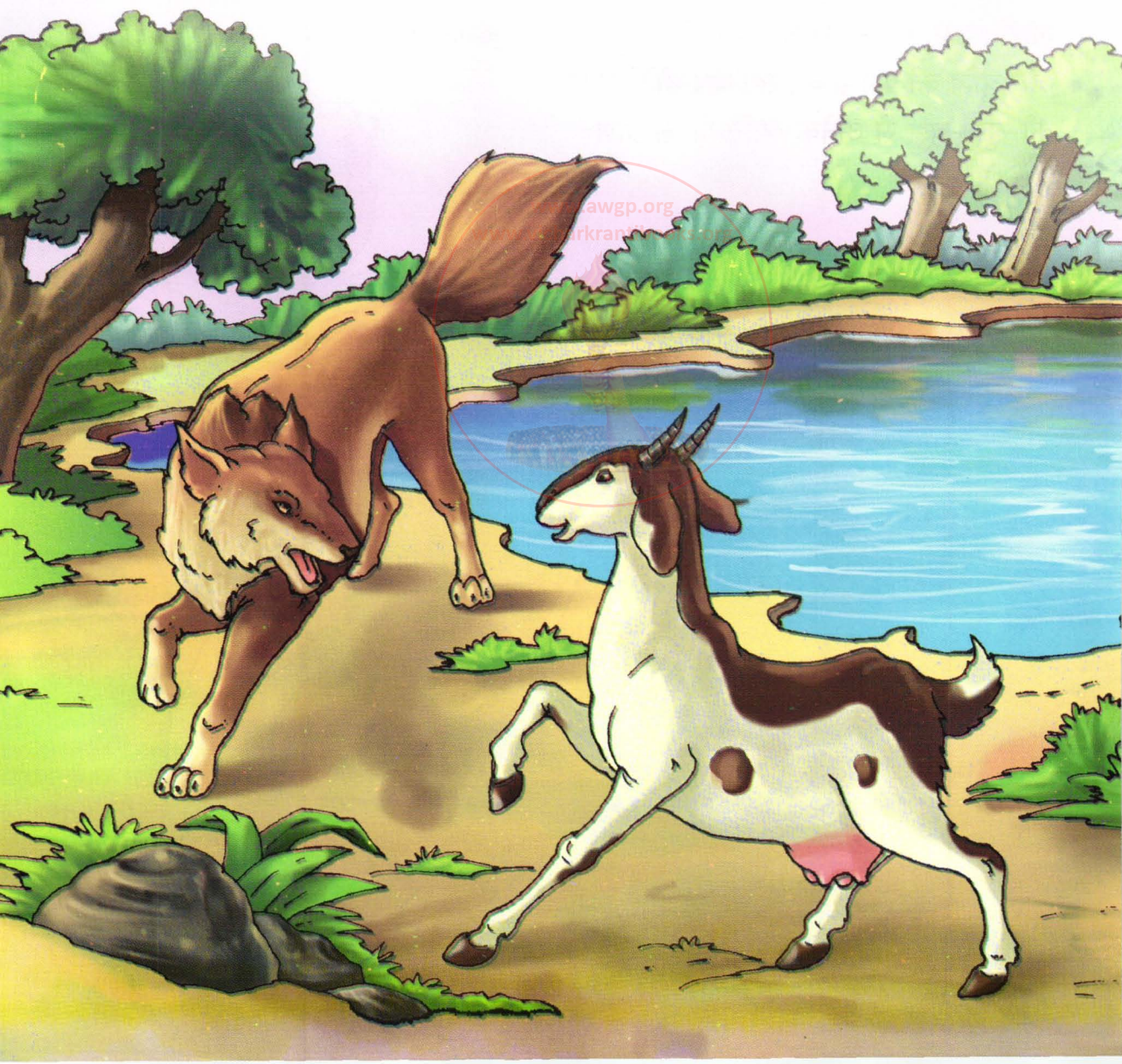

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शेर बोला—"तालाब बकरी का है पानी तुम्हारा है तो सियार तुम तालाब का पानी निकाल लो, तालाब खाली कर दो।" अब तो सियार घबरा गया। पानी तो खाली किया नहीं जा सकता था। सियार ने अपनी बात वापस ले ली और कहा—"चलो ठीक है।" बुद्धि से काम लेने पर बकरी प्रसन्न हो गई। न्याय बकरी को मिला और सियार की चालाकी नहीं चल पाई।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेवा पांडित्य से बढ़कर

बापू के सेवाग्राम में एक दिन एक विद्वज्जन आए। उन्होंने अपनी विद्वत्ता के बारे में गांधी जी को बताया। बाद में उन्होंने गांधी जी से कहा कि उन्हें ऐसा काम बताएँ जो वे कर सकते हैं। बापू ने उनसे कहा—''यदि वास्तव में उनके पास समय है और वे सेवा करना चाहते हैं, तो आश्रम के प्रांगण में झाड़ू लगावें अथवा गेहूँ पीस दें।'' अपने को प्रकांड विद्वान समझने वाले उन सज्जन के अहं को चोट तो लगी, पर बापू ने उनके जीवन की विचारधारा बदल दी, तब वह विद्वान व्यक्ति भी समझा कि सेवा कार्य हेतु किसी पांडित्य की नहीं, समर्पण की आवश्यकता रहती है।

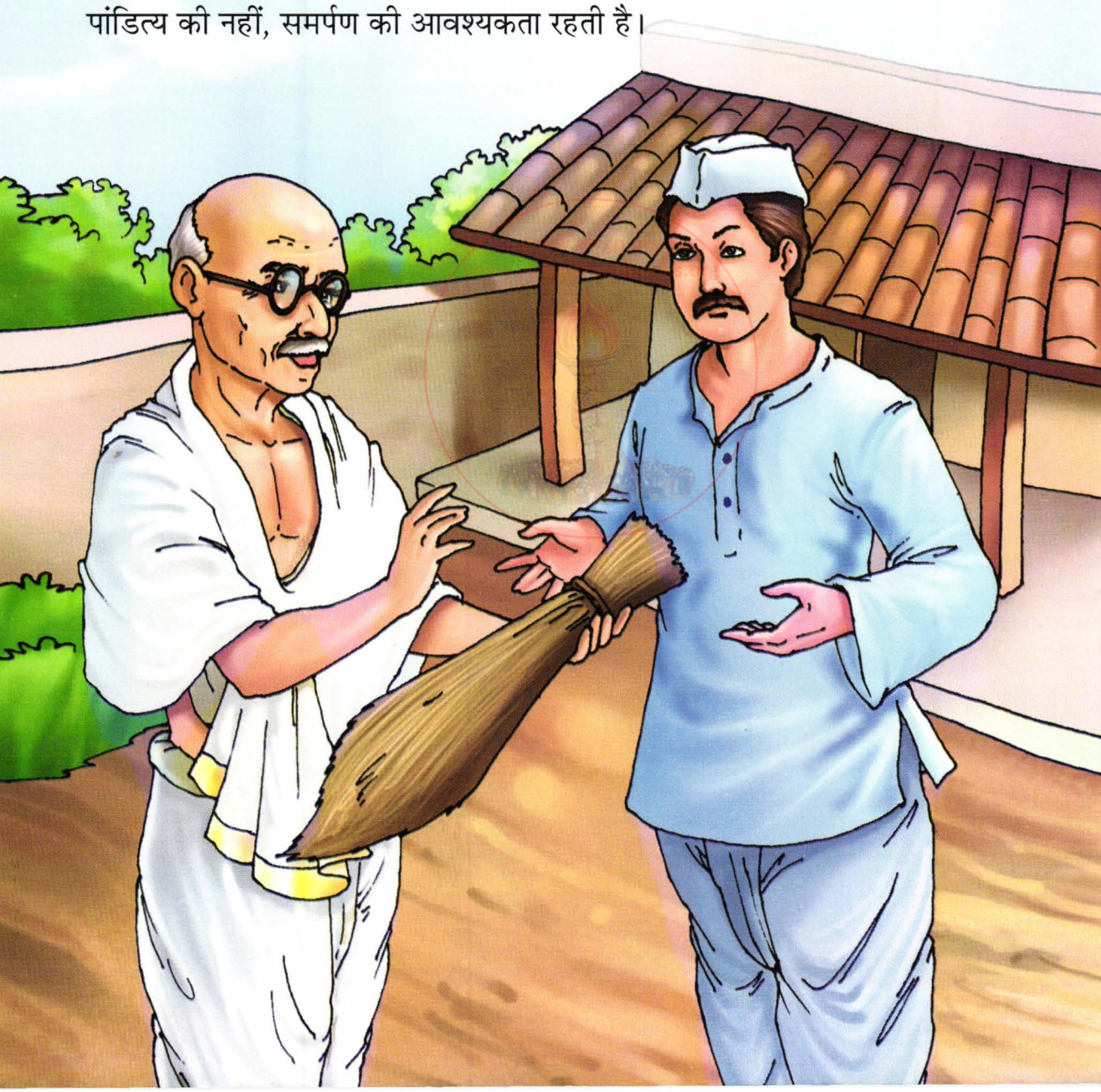

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अज्ञानी को क्षमा करो

नगर-नायक जनता की भीड़ लेकर ईसा को उनके निवास-स्थान पर गिरफ्तार करने लगे तो उनके शिष्य से न देखा गया, वह तलवार निकालकर गिरफ्तार करने वालों की ओर झपटा।

महात्मा ईसा ने उसे रोकते हुए कहा—"बेटे! तलवार म्यान में करो। इन पर क्रोध मत करो। ये बेचारे नहीं जानते कि यह क्या कर रहे हैं? किंतु तुम्हें तो जानना चाहिए कि तुमको क्या करना चाहिए और क्या कर रहे हो। यदि इनको अपने कार्य का ज्ञान रहा होता तो ये ऐसा कदापि नहीं करते। अज्ञानी व्यक्ति क्रोध के नहीं, दया के पात्र हैं।"

"वातावरण शांत रखो और जो मृत्यु का प्याला परमपिता ने मेरे लिए पीने को भेजा है, उसे मुझे खुशी से पीने दो। मेरे कर्त्तव्य में हिंसा की दुर्गंध न भरो। इन्हें खुद क्षमा करो और परमपिता से भी क्षमा कर देने के लिए प्रार्थना करो।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मित्र की परख

एक नदी के किनारे बिच्छू और केकड़ा रहते थे। धीरे-धीरे उनकी मित्रता बढ़ने लगी। वे घुलमिल कर बातें करते रहते। एक दिन बिच्छू बोला—"मित्र! तुम्हें पानी में तैरते हुए देखता हूँ तो मुझे आनंद भी होता है और ईर्ष्या भी। आनंद इस बात से कि तुम्हें तैरते समय कितनी प्रसन्नता होती होगी। ईर्ष्या इस बात से कि काश! मैं भी तुम्हारी तरह तैरता और आनंद लेता।"

केकड़ा बोला—"दोस्त! तुम्हारी खुशी ही मेरी खुशी है। मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बिठाकर सैर तो करा दूँगा। पर तुम्हारा स्वभाव डंक मारने का है। यदि तुम भूल से भी डंक मार बैठे तो मैं तो मर ही जाऊँगा।" बिच्छू कहने लगा—"अरे, मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ जो तुम्हें डंक मारूँगा। तुम्हारे मरने पर मैं भी तो डूब जाऊँगा। मैं तो तुम्हारे उपकार का सदा आभारी रहूँगा।" केकड़े को बिच्छू पर विश्वास हो गया। उसने बिच्छू को पीठ पर बिठाकर तैरना प्रारंभ कर दिया। बिच्छू को तैरते समय बड़ी ही मस्ती आई। फिर तो उसे अपनी शपथ याद ही न रही। उसने मौज में आकर अपना डंक केकड़े की पीठ में चुभा दिया। केकड़ा तिलमिला उठा। वह छटपटाते हुए पानी में डूबने लगा। उसके साथ ही बिच्छू भी बीच नदी में जल में डुबकी लेने लगा।

मरते समय केकड़ा बड़ों की यह सीख याद कर रहा था कि मित्रता सोच-समझकर ही करनी चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घमंडी कबूतर

सभी पक्षी अपने मजबूत घोंसले बनाते है। अंडे-बच्चों समेत उनमें गुजारा करते। पर मूर्ख कबूतर ऐसा था जो लापरवाही से तिनके रखता। जब कभी जोर की हवा चलती उसका घोंसला टूट जाता था। उसने अन्य पक्षियों से कहा—"वे उसे घोंसला बनाना सिखा दें।"

उनने बनाकर दिखाया और समझाया। पर उपकार न मानने वाले कबूतर ने उन्हें दुतकारते हुए कहा—"इसमें कौन बड़ी बात थी। आप लोग न बताते तो भी मैं ऐसा बना लेता।" पक्षी उसका उपकार न मानने की आदत और उसके अहंकार पर दुखी होकर वापस लौट गए। वे फिर कबूतर के बुलाने पर भी कभी नहीं आए। कबूतर अभी भी औंधे-तिरछे घोंसले बनाता है और बार-बार घर उजड़ जाने का कष्ट उठाता है। घमंडी, अहंकारी और दूसरों का उपकार न मानने वाला सदैव कष्ट ही उठाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईमानदारी का फल

एक गाँव में एक लड़का रहता था। उसके घर की आर्थिक स्थिति ठीक न थी। उसके मन में विचार आया कि किसी बड़े शहर में जाकर नौकरी करे। वह कलकत्ता (कोलकाता) गया और नौकरी ढूँढ़ने लगा। बहुत ही खोज करने के बाद उसे एक सेठ के यहाँ नौकरी मिली। नौकरी छह आने रोज की थी। काम था सेठ जी को प्रतिदिन चार घंटे अखबार और किताबें सुनाने का। लड़का बहुत ही जरूरतमंद था। उसने वह नौकरी स्वीकार कर ली।

एक दिन की बात है कि लड़के ने दुकान के फर्श पर एक कोने में सौ-सौ रुपये के आठ नोट पड़े देखे। उसने चुपचाप उन्हें अखबार और किताबों से ढक दिया।

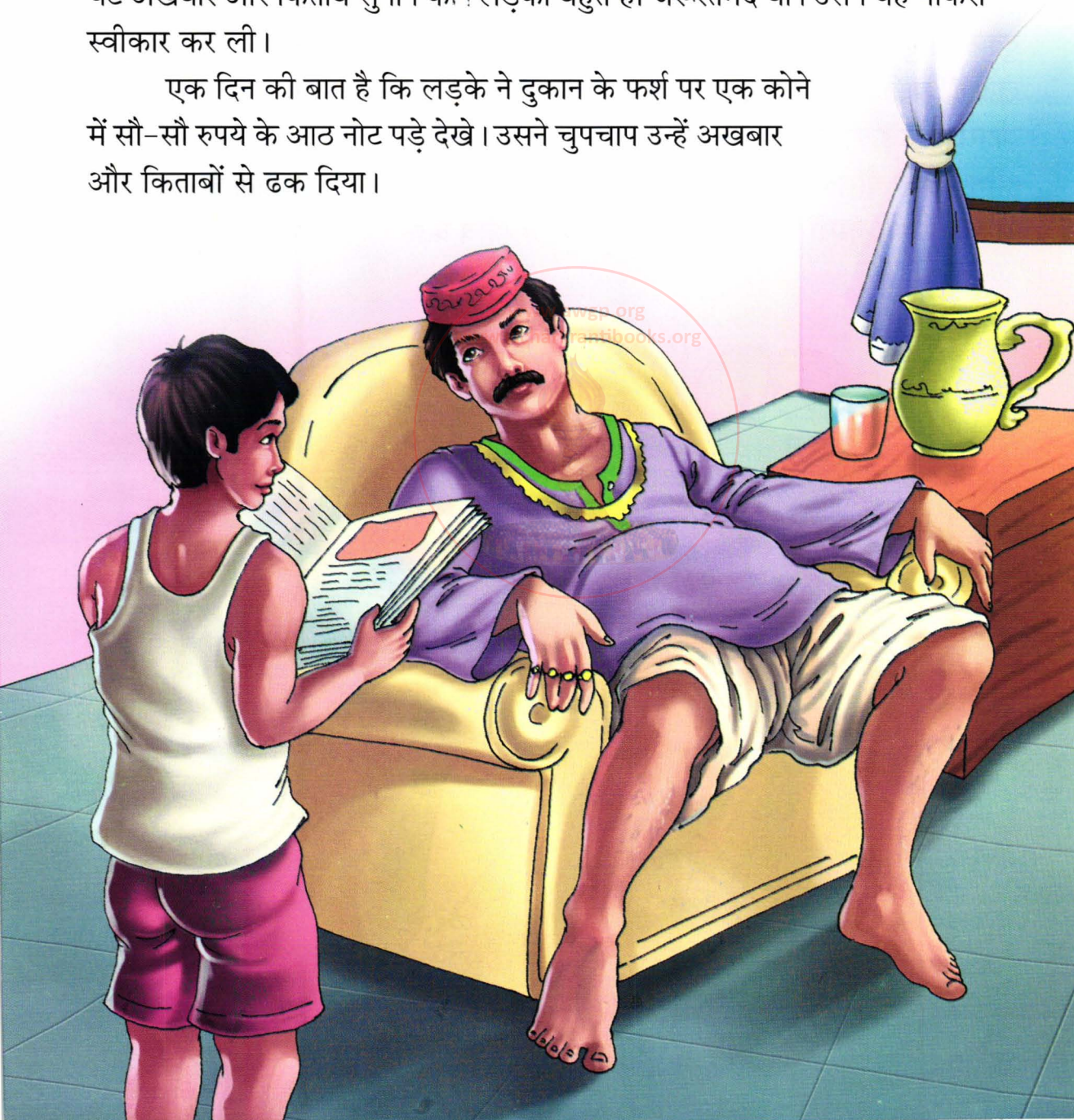

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरे दिन रुपयों की खोजबीन हुई। लड़का सुबह जब दुकान पर आया तो उससे पूछा गया। लड़के ने तुरंत ही प्रसन्नता से रुपये निकालकर ग्राहक को दे दिए। वह बहुत ही खुश हुआ। छोटे लड़के की ईमानदारी से सभी को बहुत प्रसन्नता हुई। सेठ की आँखों में भी लड़के की इज्जत बढ़ गई। सेठ जी ने लड़के को पुरस्कार देना चाहा पर उसने मना कर दिया। वह बोला—"सेठ जी, मैं आगे पढ़ना चाहता हूँ। पर पैसों के अभाव में पढ़ाई कर पाना संभव नहीं है। आप कुछ सहायता करें।"

सेठ जी ने लड़के की पढ़ाई का प्रबंध कर दिया। वह खूब मेहनत से पढ़ता गया। यही लड़का आगे चलकर बहुत बड़ा साहित्यकार बना। इसका नाम था—रामनरेश त्रिपाठी। हिंदी साहित्य में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

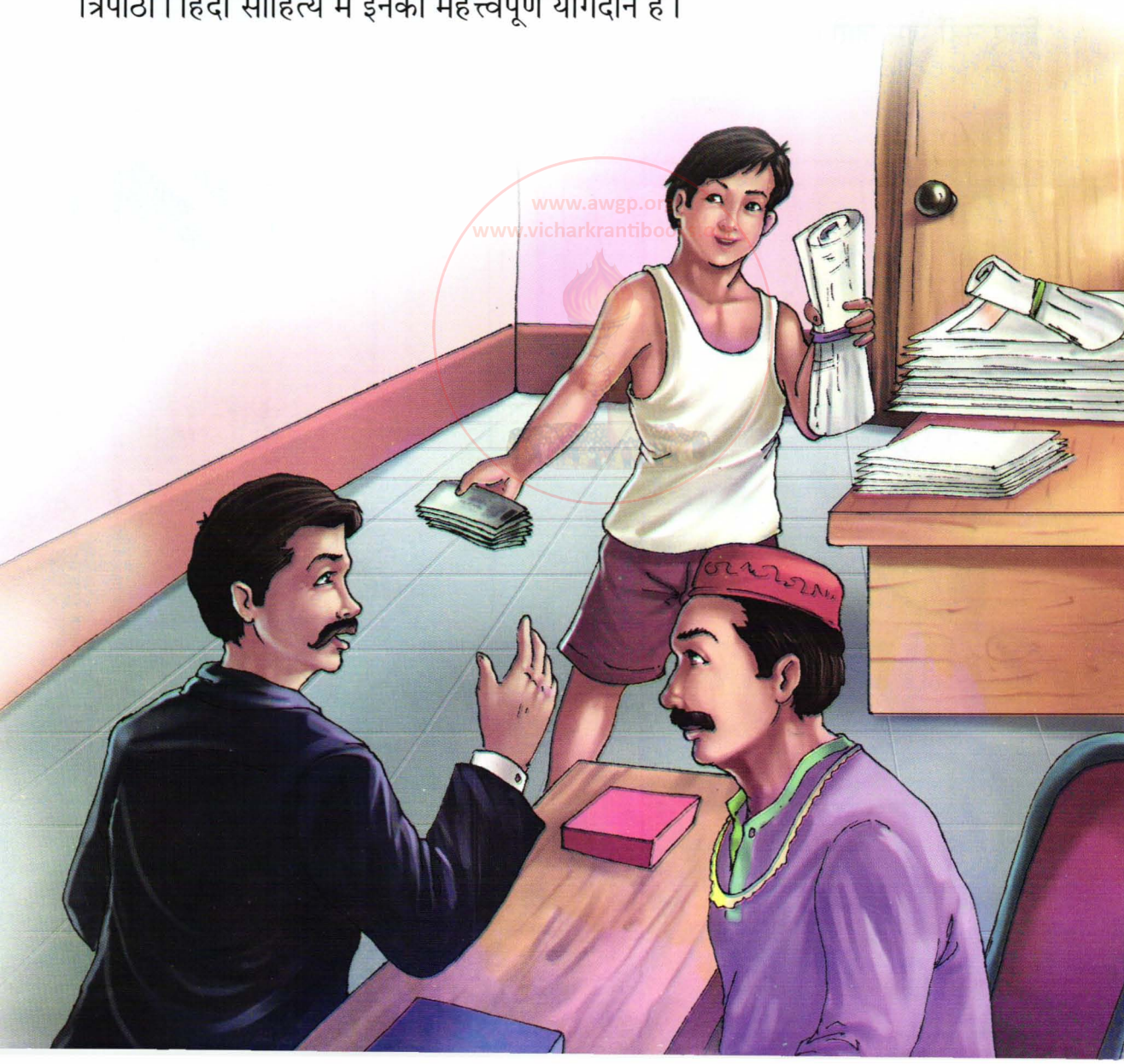

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन भर सीखूँगा

ग्रीस के दार्शनिक प्लेटो से दूर-दूर के लोग कुछ सीखने आते थे। पर वे बताने के साथ-साथ उन बातों को उनसे भी पूछते थे जो उन्हें आती थीं।

लोगों ने कहा—"जो आपसे पूछने आते हैं आप उनसे भी जानने का प्रयत्न करते हैं। इसमें आपकी इज्जत घटती है।"

प्लेटो ने कहा—"मैं जीवन भर विद्यार्थी बना रहना चाहता हूँ। यह पदवी मुझे सबसे बड़ी लगती है।"

अच्छे संस्कार डालने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। वे अनायास आकर सदा के लिए नहीं जम जाते।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तृष्णा मृत्यु का कारण बनी

दो लोमड़ियाँ थीं—एक जवान, दूसरी बूढ़ी। दोनों एक मुर्गी फार्म में जा पहुँचीं। मालिक था नहीं। सोचने लगीं—"किस प्रकार घात लगाएँ और पेट भरें ?"

दोनों ने दो तरह की तैयारी की; जवान का मन था कि सात मुर्गियाँ एक ही बार में खा डालें और सात सप्ताह तक माँद में निश्चिततापूर्वक सोएँ। बूढ़ी का मन अगले दिनों का ख्याल रखते हुए एक-एक कर खाने को था। दोनों ने अपनी-अपनी उपयोगिता बताई, जिद की और निर्णय न ले पाने के कारण वही किया, जो मन में था। जवान ने सात मुर्गियाँ खायीं। माँद में पहुँचते-पहुँचते पेट फूला और वह कराहती हुई दम तोड़ गई। बूढ़ी को एक दिन तो कुछ न हुआ; पर दूसरे दिन मालिक को पता चल गया और चोर का सफाया करने के लिए छिपकर बैठ गया। जैसे ही बूढ़ी लोमड़ी घुसी, वैसे ही मालिक ने कुल्हाड़ी से लोमड़ी की गरदन काट डाली।

एक लोमड़ी ने दुबारा आने का खतरा समझा, दूसरे ने धीरे-धीरे खाने का धैर्य साधा। ये दोनों गुण ठीक थे; पर तृष्णा दोनों ने न छोड़ी इसलिए तृष्णा दोनों को खा गई।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाणक्य का आदर्श

महामनीषी चाणक्य राज्य के प्रधानमंत्री भी थे। दिन भर वे संपर्क और व्यवस्था कार्यों में निरत रहते। रात्रि को सरकारी फाइलें देखते और उपासना कृत्य पूरा करते।

उनके पास दो दीपक थे। एक को तब जलाते जब राजकाज का काम करते, उसमें राजकोष का तेल जलता। पर जब वे उपासना करते तो पहला दीपक बुझाकर दूसरा जलाते, जिसमें उनके निजी परिश्रम का उपार्जित तेल जलता।

चाणक्य कहते थे—''उपासना निजी लाभ के निमित्त की जाती है। उसकी सुविधा में दूसरों की सहायता क्यों ली जाए?''

जब तक जनजीवन इन आदर्शों से आप्लावित रहा, तब तक राष्ट्र की गरिमा कितने उच्च शिखर पर थी उसका एक अनूठा उदाहरण इस घटना से मिलता है।

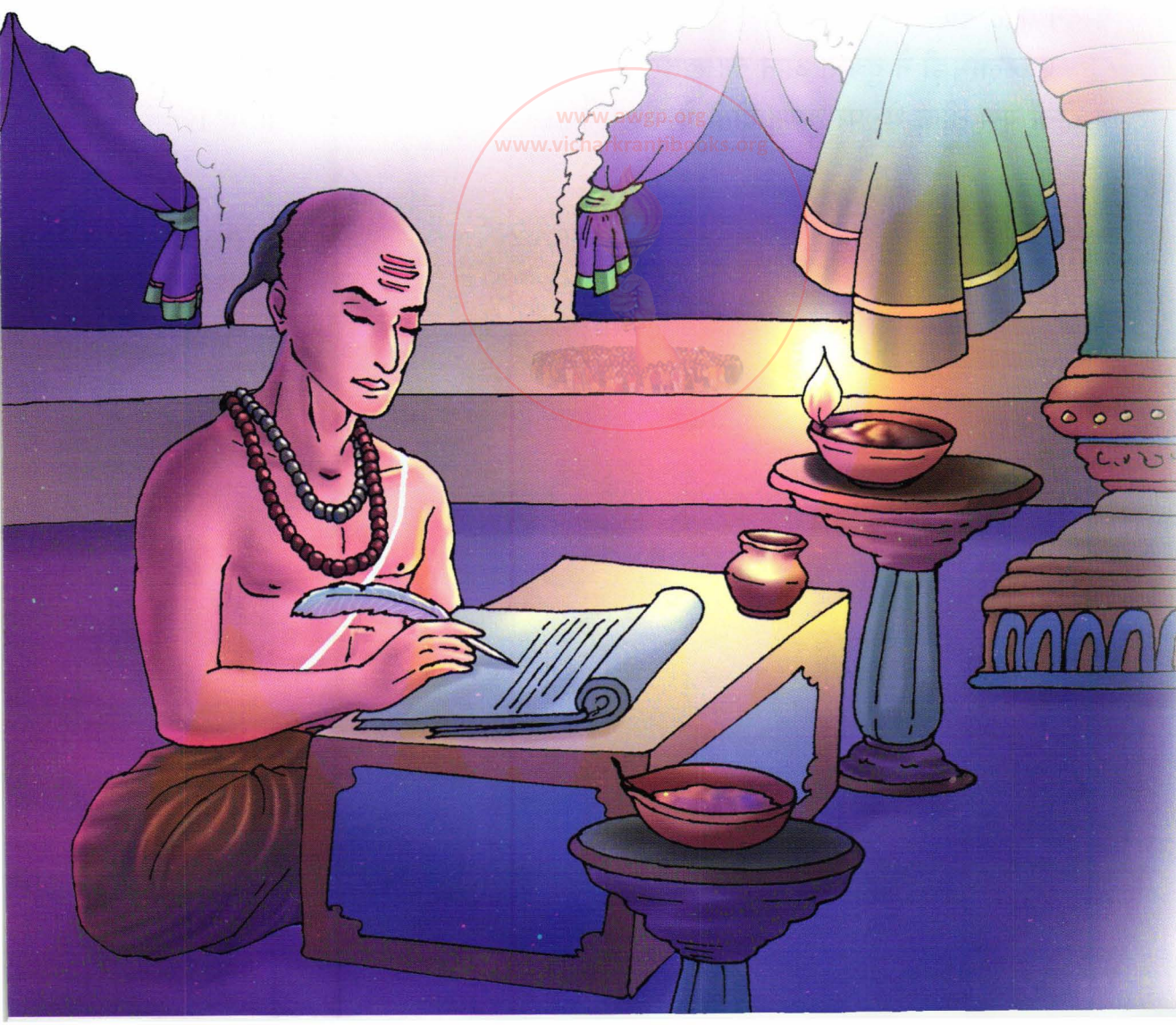

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सज्जन की खोज

एक बादशाह को एक नौकर की तलाश थी। उसने अपने मंत्री से कहा—"ऐसे व्यक्तियों को जो नौकरी करना चाहते हैं बुलाओ।" राजा के सामने तीन उम्मीदवार पेश किए गए। बादशाह ने पूछा—"यदि मेरी और तुम्हारी दाढ़ी में साथ-साथ आग लग जाए तो पहले किसकी दाढ़ी की आग बुझाओगे?"

एक ने कहा, पहले आपकी बुझाऊँगा। दूसरे ने कहा, पहले अपनी बुझाऊँगा। तीसरे ने कहा, एक हाथ से अपनी और दूसरे हाथ से आपकी दाढ़ी की आग बुझाऊँगा। बादशाह ने तीसरे आदमी की नियुक्ति कर ली और दरबारियों से कहा—"जो अपनी परवाह न करके दूसरों का भला करता है, वह व्यवहारकुशल नहीं है। जो स्वार्थ को ही सर्वोपरि समझता है वह नीच है और जो अपनी तथा दूसरों की भलाई का समान रूप से ध्यान रखता है उसे ही सज्जन कहना चाहिए। मुझे ऐसे ही सज्जन की आवश्यकता थी सो उस तीसरे आदमी को राजा ने अपने यहाँ नौकर रख लिया।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चिड़िया का बच्चा

एक घोंसले में एक चिड़िया का बच्चा और उसकी माँ रहते थे। वह बाहर निकलने का साहस नहीं कर पा रहा था। एक दिन की बात है कि घोंसले में बैठे नन्हे से चिड़िया के बच्चे ने अपने पर फड़फड़ाए और सहमकर जहाँ था, चिपककर बैठ गया। बच्चे को डरा हुआ देखकर माँ ने उसे घोंसले से नीचे धकेल दिया और कहा—"जब तक तू भय नहीं छोड़ेगा, उड़ना कहाँ से आएगा?"

दूसरे क्षण नन्हा पक्षी हवा में उड़ रहा था।

माँ तो माँ है। वह अपना हृदय कड़ा करके बच्चे के विकास के लिए कठोर शिक्षा की विधि भी अपनाती है। उसके हर काम में बालक का हित ही छिपा रहता है।

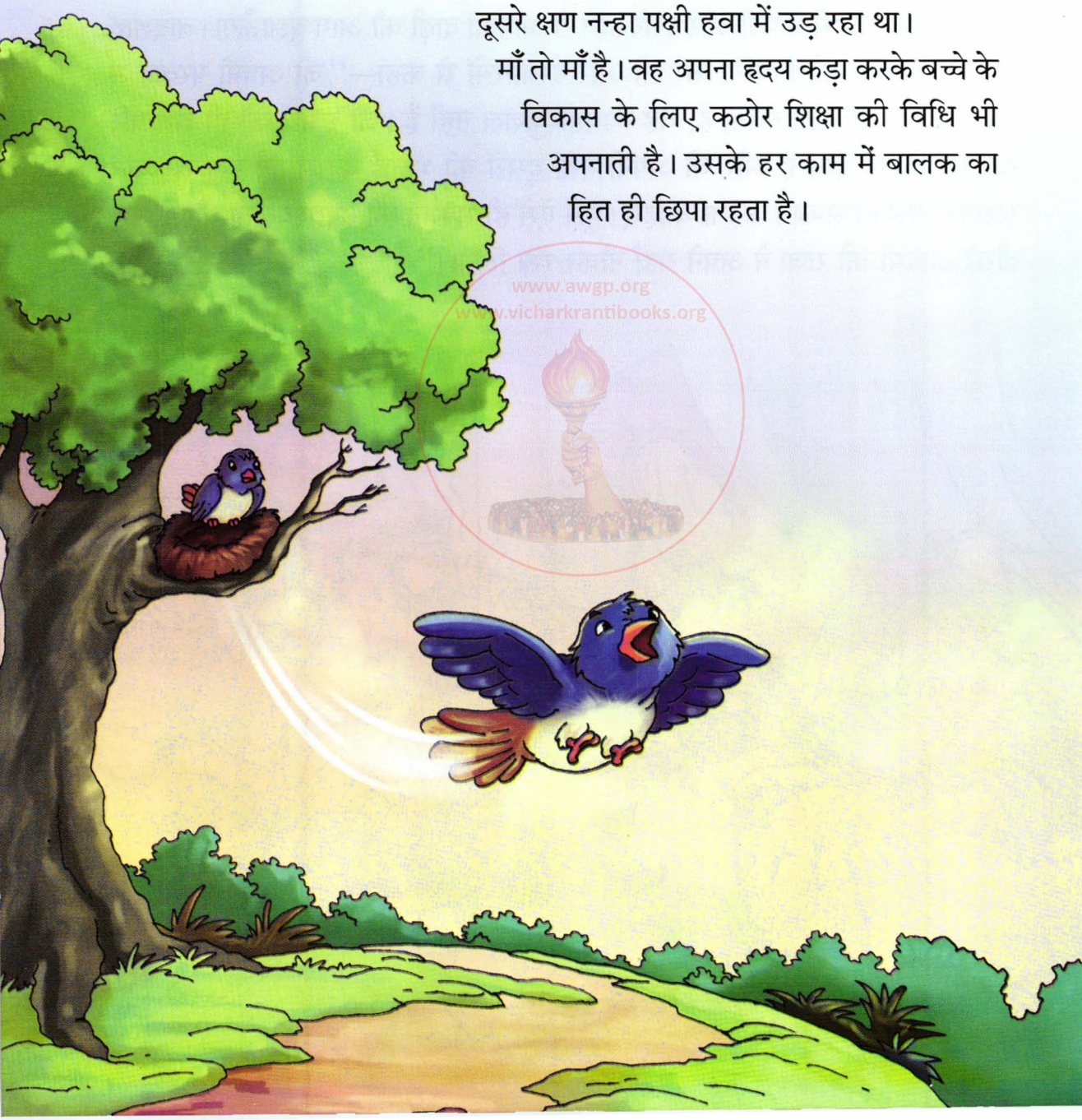

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सच्चा अधिकार

गोपाल कृष्ण गोखले ने सभी प्रश्नों के सही उत्तर दिए इस कारण कक्षा में प्रथम पुरस्कार मिला, अध्यापक ने उनकी बुद्धि तथा लगन को सराहा भी।

पुरस्कार उस समय तो उन्होंने रख लिया, पर रात बेचैनी से बिताई और दूसरे दिन उठते ही अध्यापक के घर जा पहुँचे। पुरस्कार वापस लौटाते हुए उनने कहा—"यह उत्तर तो मैंने चुपके से किसी छात्र से पूछकर दिए थे। पुरस्कार का असली अधिकारी वही है।" अध्यापक इस हिम्मत भरी ईमानदारी पर एकदम चुप रह गए। उन्होंने दोबारा वही इनाम लौटाया और कहा—"यह तुम्हारी ईमानदारी और बहादुरी के लिए है, उत्तीर्ण होने के कारण नहीं।"

व्यक्ति का आचरण ही व्यक्ति को महान बनाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुशासनहीनता ठीक नहीं

एक बार मेंढकों को अपने समाज की अनुशासनहीनता पर बड़ा खेद हुआ और वे शंकर भगवान के पास एक राजा भेजने की प्रार्थना लेकर पहुँचे। प्रार्थना स्वीकृत हो गई। कुछ समय के बाद शिवजी ने अपना बैल मेंढकों के लोक में शासन करने भेजा। मेंढक इधर-उधर मनमाने ढंग से घूमते फिरे, सो उसके पैरों के नीचे दबकर सैकड़ों मेंढक ऐसे ही कुचल गए।

ऐसा उन्हें पसंद नहीं आया। मेंढक फिर शिवलोक पहुँचे और पुराना हटाकर नया राजा भेजने का अनुरोध करने लगे। यह प्रार्थना भी स्वीकार कर ली गई। बैल वापस बुला लिया गया। कुछ दिन बाद स्वर्गलोक से एक भारी शिला मेंढकों के ऊपर गिरी, उससे हजारों की संख्या में वे कुचलकर मर गए।

इस नई विपत्ति में मेंढकों को और भी अधिक दु:ख हुआ और वे भगवान के पास फिर शिकायत करने पहुँचे।

शिवजी ने गंभीर होकर कहा—"बच्चो! पहली बार हमने अपना वाहन बैल भेजा था। दूसरी बार हम जिस स्फटिक शिला पर बैठते हैं, उसे भेजा। इसमें शासकों का दोष नहीं है। तुम लोग जब तक स्वयं अनुशासन में रहना न सीखोगे और मिल-जुलकर अपनी व्यवस्था बनाने के लिए स्वयं तत्पर न होगें तब तक कोई भी शासन तुम्हारा भला न कर सकेगा।" मेंढकों ने अपनी भूल समझी और शासन से बड़ी आशाएँ रखने की अपेक्षा, अपना प्रबंध आप करने में जुट गए।

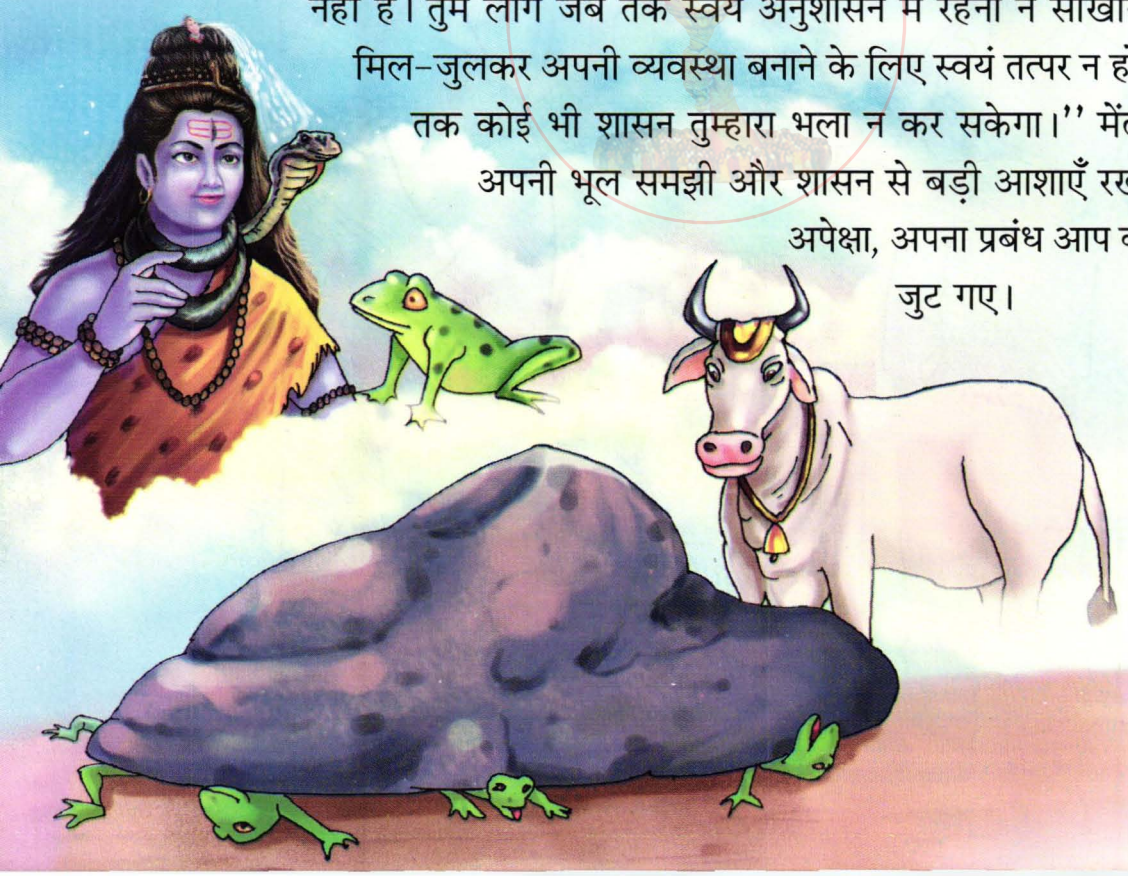

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बात का बतंगड़

एक खरगोश बेल के पेड़ के नीचे सोया था। ऊपर से बेल का पका फल गिरा, सो खरगोश के सिर पर गिरा। कुछ-कुछ नींद में था इस कारण उसे लगा कि जमीन फट गई और आसमान ऊपर से गिरा। यही बात कहता हुआ वह बेतहाशा भागा। उसकी आवाज सुनकर जंगल के दूसरे जानवर भी उसी दिशा में भागने लगे। जंगल भर में भयंकर भगदड़ मच गई। सभी कहते रहे—आसमान गिरा, आसमान गिरा।

सामने से सिंह आ रहा था। भगदड़ का कारण सुनकर बहुत हँसा और सामने वालों को रोककर कहा—"चलो, असलियत का पता तो लगाएँ।" पूछते-पूछते अंत में पता चला कि खरगोश ने यह बात फैलाई है। उसे वहाँ ले जाया गया, जहाँ वह घटना हुई थी। पता चला कि उनींदे में सिर पर बेल का फल गिरा था। उतनी बात का बतंगड़ बन गया।

सच है, किसी बात को सही ढंग से सोचना जरूरी है। नहीं तो बहुत से भ्रम और भटकनें बढ़ती जाती हैं। इससे व्यक्ति स्वयं भी परेशान होता है और दूसरों को भी कठिनाई में डालता है।

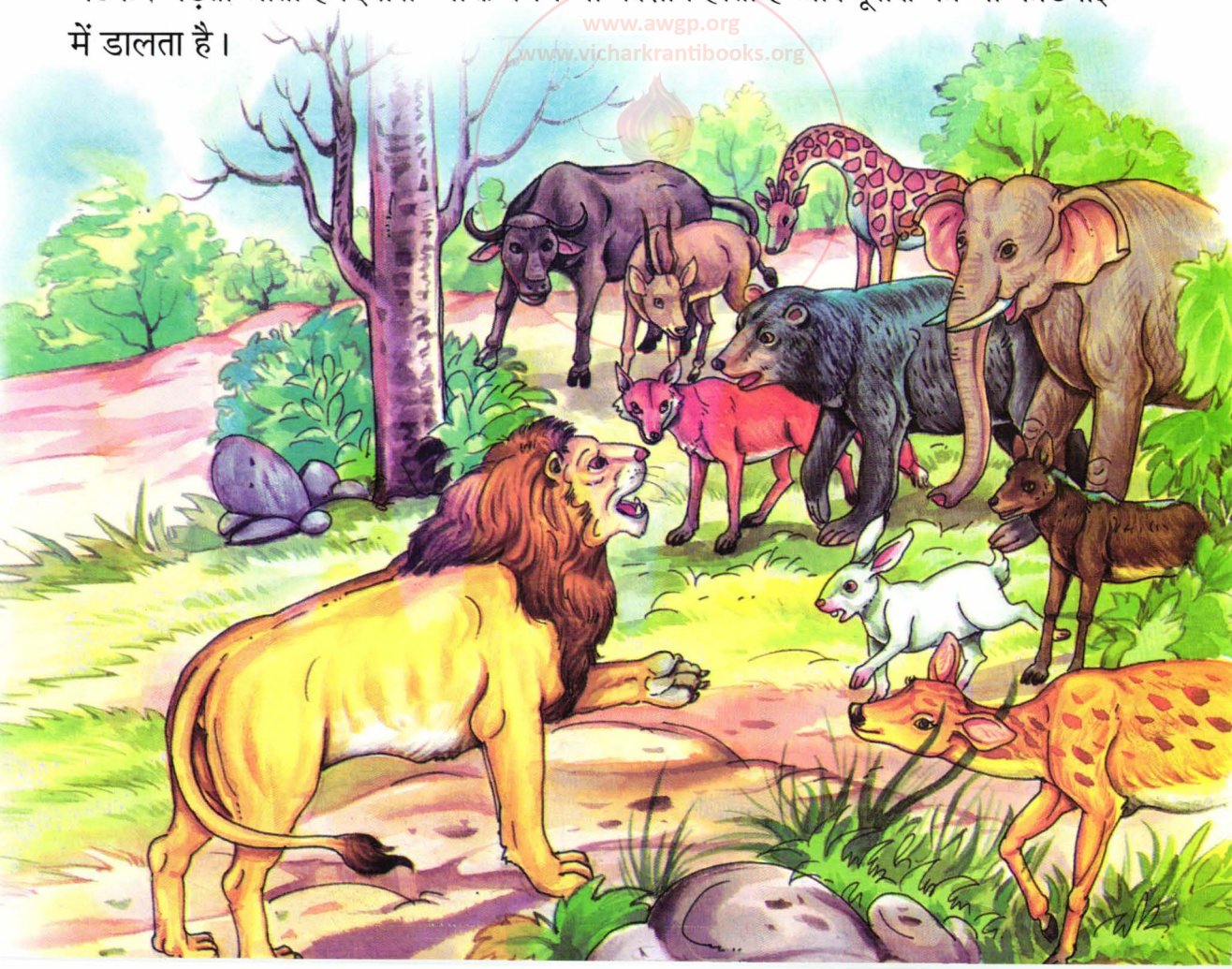

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लालची की प्राणहानि

अंधड़ आया, उसके कारण एक विशाल वृक्ष पृथ्वी पर गिर गया। पेड़ के नीचे एक ऊँट बैठा था, उसकी कमर टूट गई। टहनियों पर लगे घोंसलों में पक्षी और अंडे-बच्चे कुचलकर चूरा हो गए। ढेरों मांस वहाँ बिखरा पड़ा था।

एक भूखा सियार उधर से निकला। वह अनायास ही इतना भोजन पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। सोचने लगा महीनों तक पेट भरने का मसाला मिल गया। उसने संतोष की सांस ली। निश्चिंत होकर उसने नजर दौड़ाई, तो नदी तट पर एक बड़ा सा मेढक दिखा। सियार ने सोचा—पहले इसे लपक लिया जाए, नहीं तो यह डुबकी लगाकर भाग खड़ा होगा और हाथ से निकल जाएगा। सियार ने मेढक पर झपट्टा मारा। मेढक नदी में खिसक गया। सियार भी इस चिकनी मिट्टी में फिसलता चला गया और गहरे पानी में समा गया। इसे कहते हैं, लालच का फल।

जो है, उसी में संतोष करना ही बुद्धिमत्ता है। जो अधिक और अधिक के चक्कर में पड़ते हैं, वे प्राणों से भी हाथ धो बैठते हैं।

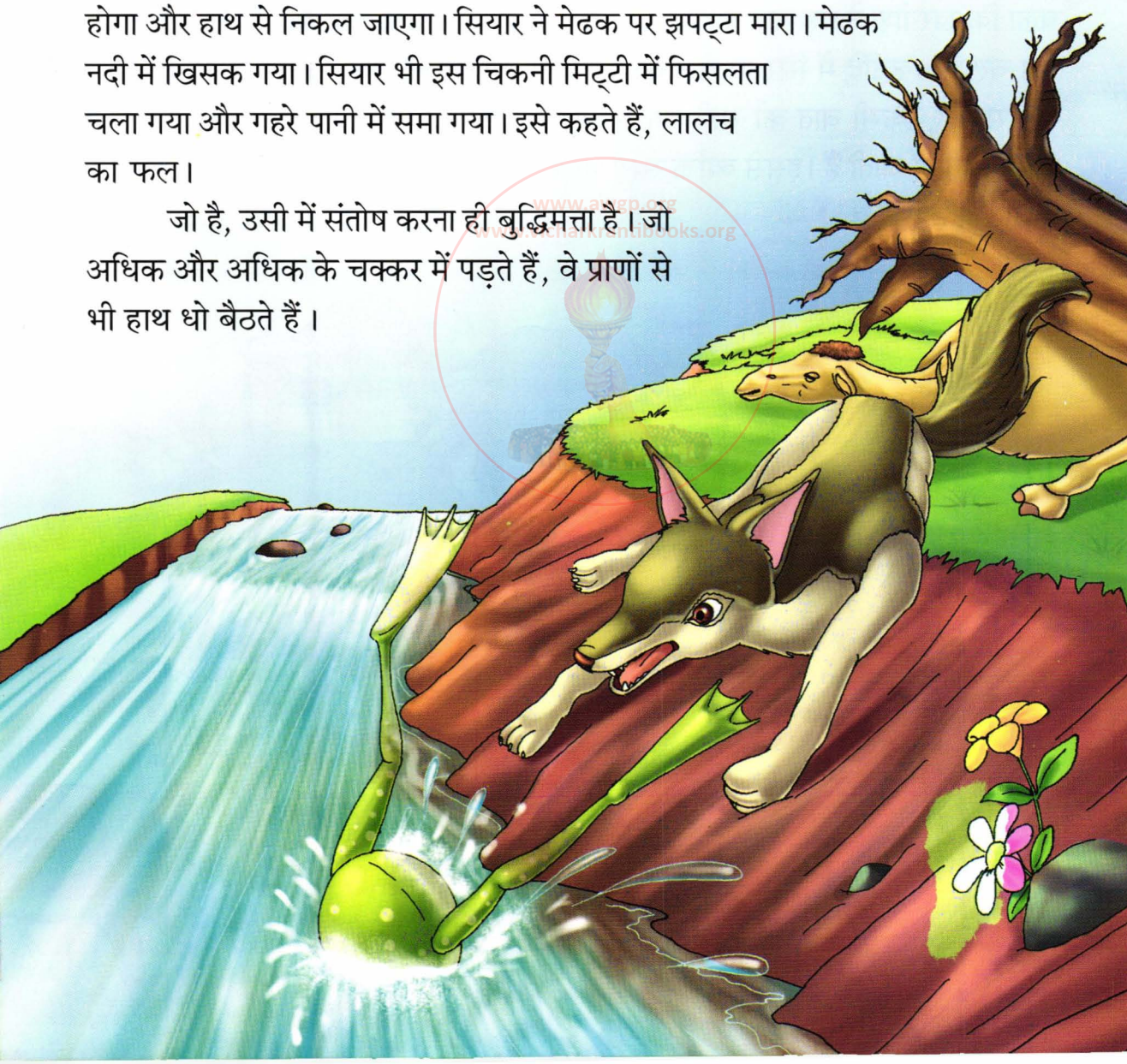

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोयल सबको प्यारी क्यों ?

एक प्यारी सी लड़की थी। वह कोयल और कौवे को देखती तो सोचती कि दोनों काले हैं पर सब कोयल को प्यार करते हैं और कौवे को मारते रहते हैं। उस लड़की ने पिताजी से एक दिन पूछा—"पिताजी कौवा और कोयल दोनों काले हैं, पर लोग कौवे को मारते और कोयल को प्यार करते हैं, यह क्यों ?"

बालिका के सिर पर हाथ फेरते हुए पिता ने उत्तर दिया—"कोयल सबको प्यारी है क्योंकि वह मीठा बोलती है। वाणी और भावनाओं की मधुरता के कारण ही वह सबकी प्यारी बन गई। कौवा तो स्वार्थी पक्षी माना जाता है। किसी का भी खाना चुरा लेता है और कठोर वाणी बोलता है इस कारण आदर से वंचित रह जाता है।" मीठा बोलना चाहिए, चालाकी कभी नहीं करनी चाहिए।

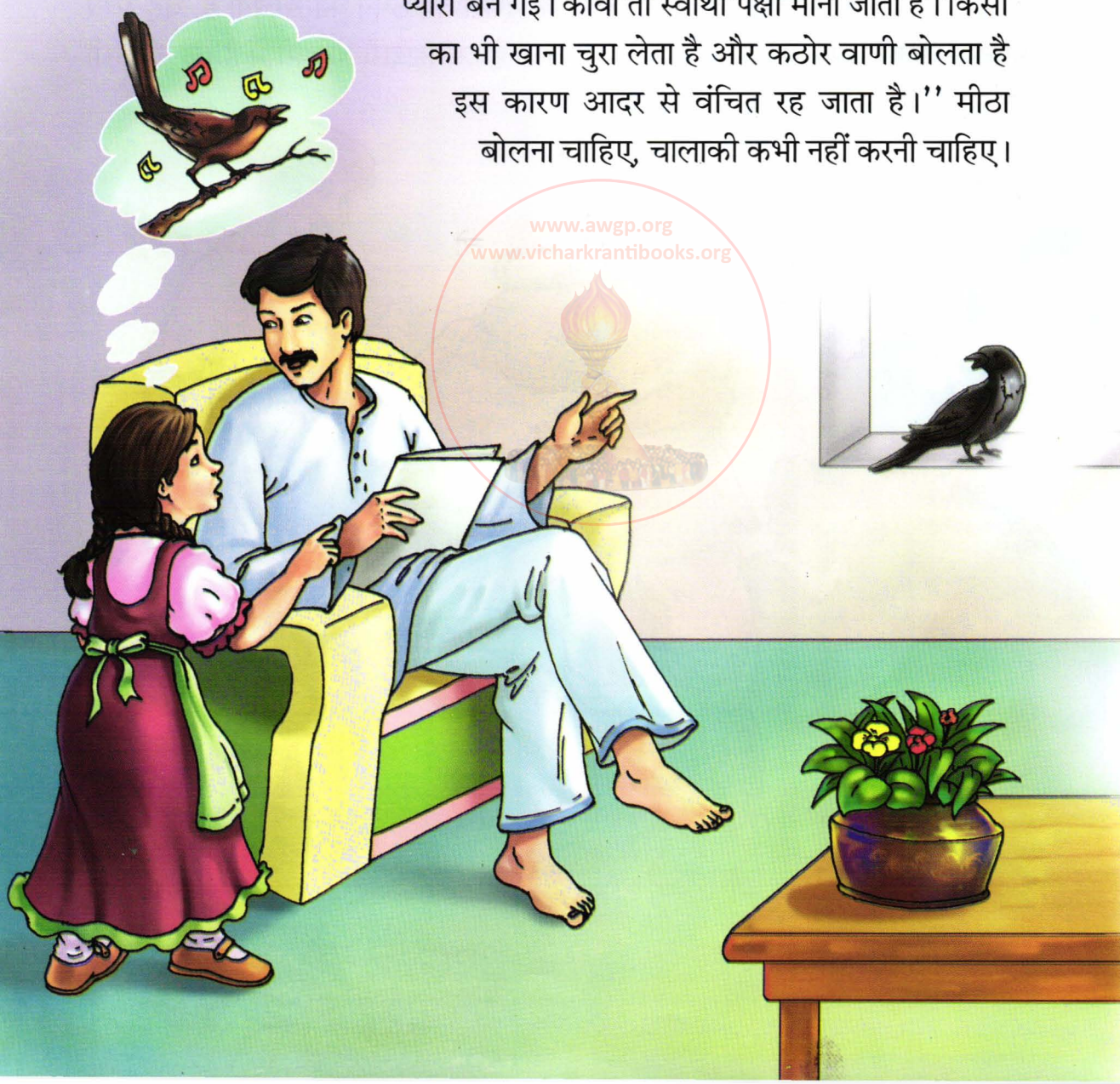

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो ठग

एक बार की बात है। दो ठग अपने-अपने घर से किसी को ठगने निकले।

एक ने एक घड़ा लेकर उसमें गले तक गोबर भरा, ऊपर से घी भर दिया। ऐसा घी का घड़ा लेकर बेचने चला। दूसरे ने नकली तलवार पर असली मूँठ तथा बढ़िया म्यान लगायी और वह भी चल पड़ा तलवार बेचने।

दोनों ठगों ने अपना-अपना दाँव चलाकर एक दूसरे को वे वस्तुएँ बेच दीं। दोनों में से किसी को भी पता न था कि दूसरा भी ठग है। वे तो अपनी अक्लमंदी पर खुश हो रहे थे। जब वे घर आए, तब भेद खुले। जो दूसरों को ठगने की सोचता है, वह स्वयं भी ठगा जाता है। सेर को सवा सेर मिल ही जाता है। समझदारी तो इसी में है कि न किसी को ठगो और न ही किसी से ठगे जाओ।

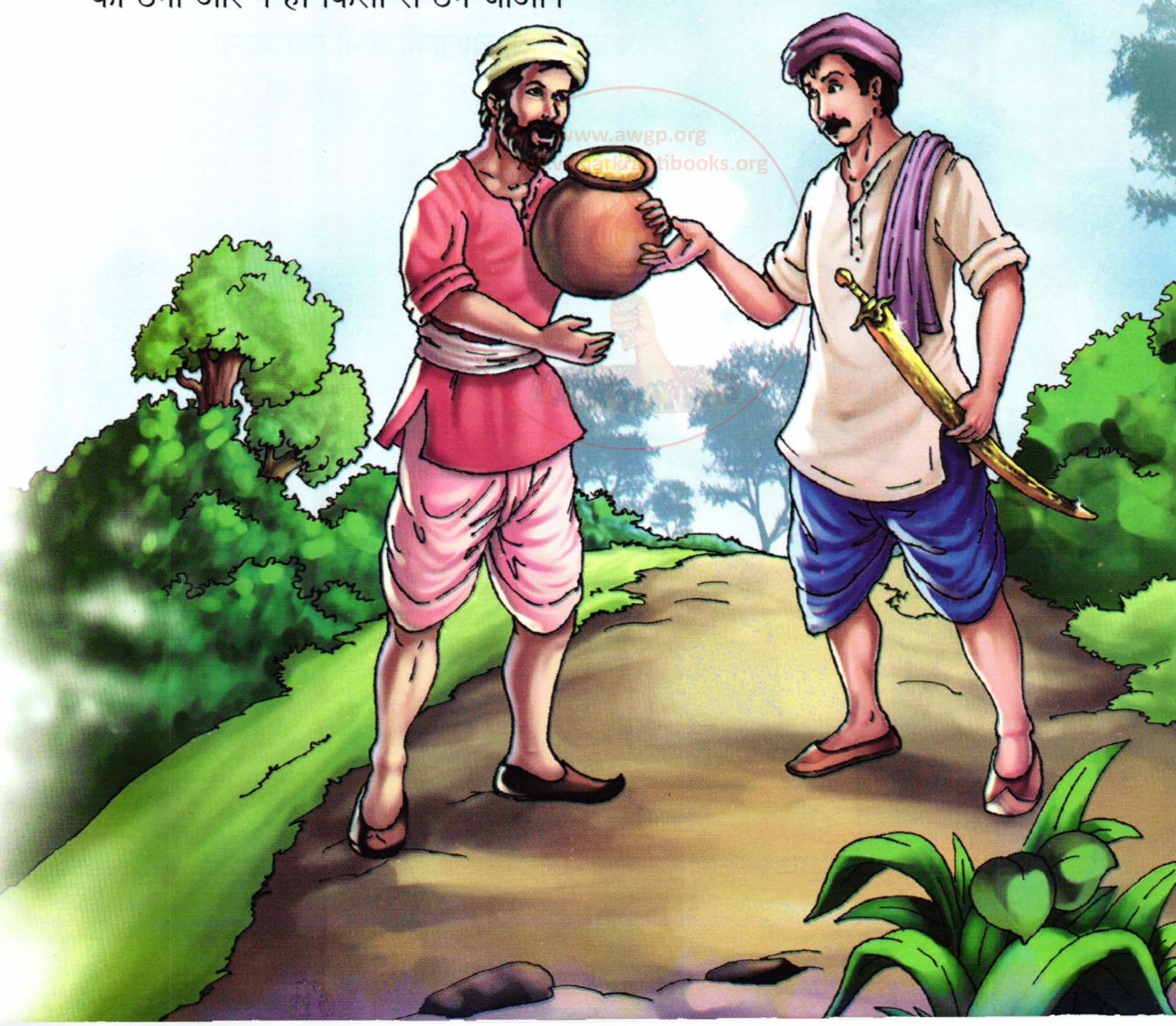

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खलीफा की महानता

बगदाद के खलीफा को तीन रुपये रोज वेतन मिलता था।

एक बार की बात है कि कोई त्योहार आया तो बेगम ने कहा—"वेतन नहीं बढ़ा सकते, तो राज्य कोष से दस रुपया उधार ले लो। उसे धीरे-धीरे चुकाते रहेंगे।" खलीफा ने कहा—"मौत का क्या ठिकाना ? कल ही आ गई तो लिया हुआ कर्ज कौन चुकाएगा। अभी समाज में जी रहे हैं सो समाज का कर्ज तो चढ़ा ही है। पहले उससे तो मुक्त हों, समाज की सेवा तो करें।"

कर्ज लेने से उन्होंने स्पष्ट इनकार कर दिया तो बेगम ने दैनिक वेतन में से ही कुछ बचाकर त्योहार मनाया। प्रजा को जब यह बात पता लगी तो उसने अपने बादशाह की महानता के आगे सिर झुका लिया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

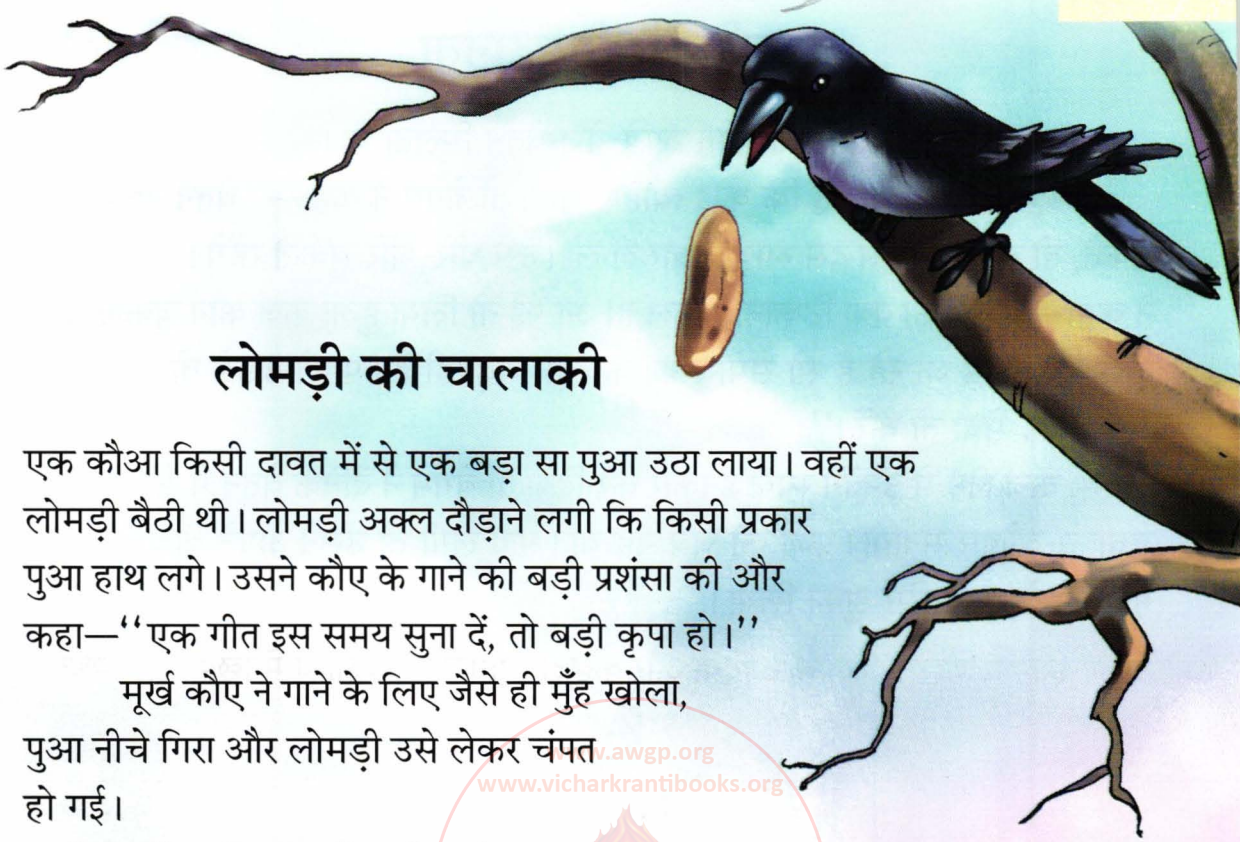

लोमड़ी की चालाकी

एक कौआ किसी दावत में से एक बड़ा सा पुआ उठा लाया। वहीं एक लोमड़ी बैठी थी। लोमड़ी अक्ल दौड़ाने लगी कि किसी प्रकार पुआ हाथ लगे। उसने कौए के गाने की बड़ी प्रशंसा की और कहा—"एक गीत इस समय सुना दें, तो बड़ी कृपा हो।"

मूर्ख कौए ने गाने के लिए जैसे ही मुँह खोला, पुआ नीचे गिरा और लोमड़ी उसे लेकर चंपत हो गई।

कभी-कभी व्यक्ति अपनी झूठी प्रशंसा से मूर्ख बन जाता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

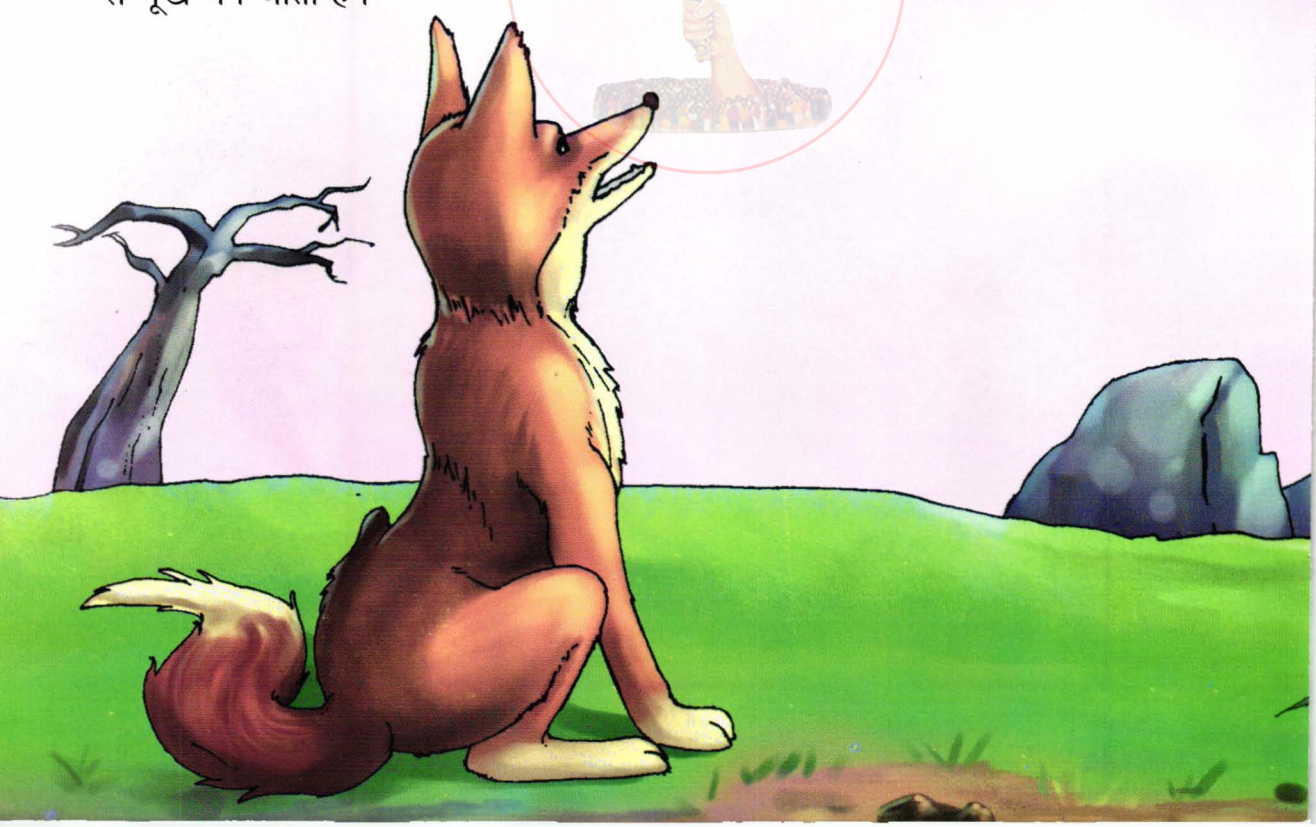

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संत की शिक्षा

एक जंगल में हिरन, कौआ, कछुआ और चूहा रहते थे। वे विपरीत बुद्धि के कारण परस्पर झगड़ते रहते थे। शिकारी अकसर उन्हें मारते रहते थे, सो उनका वंश नष्ट हो चला था। एक दिन एक संत ने उन्हें हिल-मिलकर रहने का उपदेश दिया। वे चारों मिल-जुलकर रहने को सहमत हो गए। एक दिन एक शिकारी आया। दिन भर कोई शिकार न मिलने पर उसने रेंगते हुए कछुए को पकड़ा और जाल में रखकर चलने लगा।

तीनों मित्र असमर्थ तो थे; पर उन्होंने सूझ-बूझ और सहयोग से काम लिया। हिरन शिकारी के सामने से लंगड़ाते हुए चलने लगा। कौआ उसकी पीठ पर बैठ गया। इस स्थिति का लाभ उठाकर वह आसानी से उसे पकड़ सकता है, यह सोचकर जाल जमीन पर रखकर शिकारी हिरन के पीछे दौड़ा।

इतने में चूहे ने जाल काट दिया और कछुआ भागकर एक झाड़ी में छिप गया। बहुत देर पीछा करने के बाद जब हिरन हाथ नहीं आया, तो निराश शिकारी वापस लौटा। जाल कटा हुआ था और कछुए को गायब पाया। मिल-जुलकर रहने और बुद्धि से काम लेने पर मनुष्य कठिनाइयाँ आसानी से पार कर लेता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिश्रम का फल

स्विट्जरलैंड का एक १२ वर्षीय लड़का सड़क पर गेंद उछाल रहा था। गेंद दुकानदार के शीशे में लगी और वह टूट गया। भागने का अवसर था, पर लड़का भागा नहीं। जब शीशा तोड़ने वाले की तलाश हुई तो उस लड़के ने अपना दोष बताया। शीशे का मूल्य चुकाने का प्रश्न आया, तो लड़के ने चार दिन तक उसके यहाँ मजदूरी करने की बात कही। लड़के ने चार दिन तक इतनी मेहनत और मन लगाकर काम किया कि दुकान का मालिक प्रसन्न हो गया। उसे अपने यहाँ नौकर रख लिया। लड़का पढ़ता भी रहा और नौकरी भी करता रहा। अपने सद्गुणों से मालिक का मन इतना मोह लिया कि कुछ समय बाद वह उस दुकान का पार्टनर बन गया। थोड़े ही दिनों में वह धनवान व्यक्तियों में गिना जाने लगा।

इसका श्रेय वह सदैव अपनी माँ को देता रहा जिसने उसे सिखाया था—"हमेशा मन की बात सुनना और बुद्धि से काम करना। सदा नीति की कमाई खाना।"

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संगति का असर

एक बाप अपने बेटों को गंदे लड़कों के साथ रहने और खेलने से रोकता था। पर बच्चे उस शिक्षा को मानने को तैयार न हुए । एक दिन उन्हें सबक सिखाने के लिए पिता छोटी सी टोकरी में टमाटर भरकर लाया। कहा इन्हें कल काम में लाएँगे। टमाटरों में एक सड़ा हुआ भी था। उसे भी टोकरी में रहने दिया गया। दूसरे दिन टोकरी उठाई, तो देखा गया कि सभी टमाटर सड़ गए हैं।

पिता ने समझाया—"बच्चो, देखा तुमने संगति का फल। अच्छी संगति से ही व्यक्ति का विकास होता है। बुरी संगति तो पतन की ओर ही ले जाती है।"

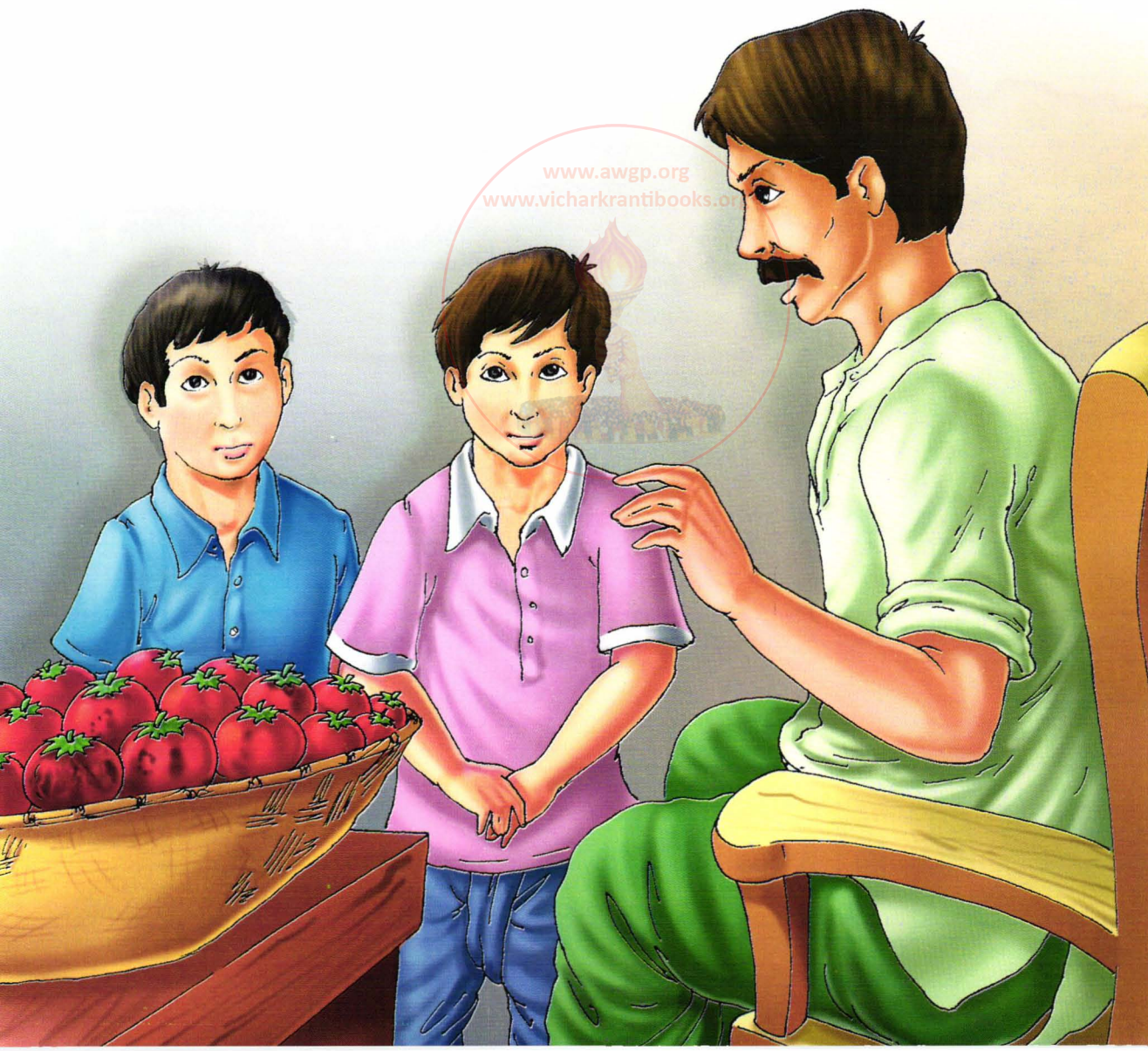

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शत्रुता का परिणाम

जंगल का राजा शेर नदी के किनारे बैठकर अपने मंत्रियों से पूछने लगा—"नदी का पानी आगे कहाँ जाएगा?" मंत्रियों ने बताया—"वह अगले देश में जाएगा, जहाँ आपके शत्रु का राज्य है।"

सिंह आग बबूला हो गया। जंगल के सब जानवरों को बुलाकर नदी को बाँधने का हुक्म दिया। बाँध बनते-बनते बाढ़ आ गई और सिंह का सारा परिवार डूबकर मर गया। मंत्री ने बाँध तुड़वाया और कहा—"मन में शत्रुता का भाव रखने वालों की ऐसी ही दुर्गति होती है।"

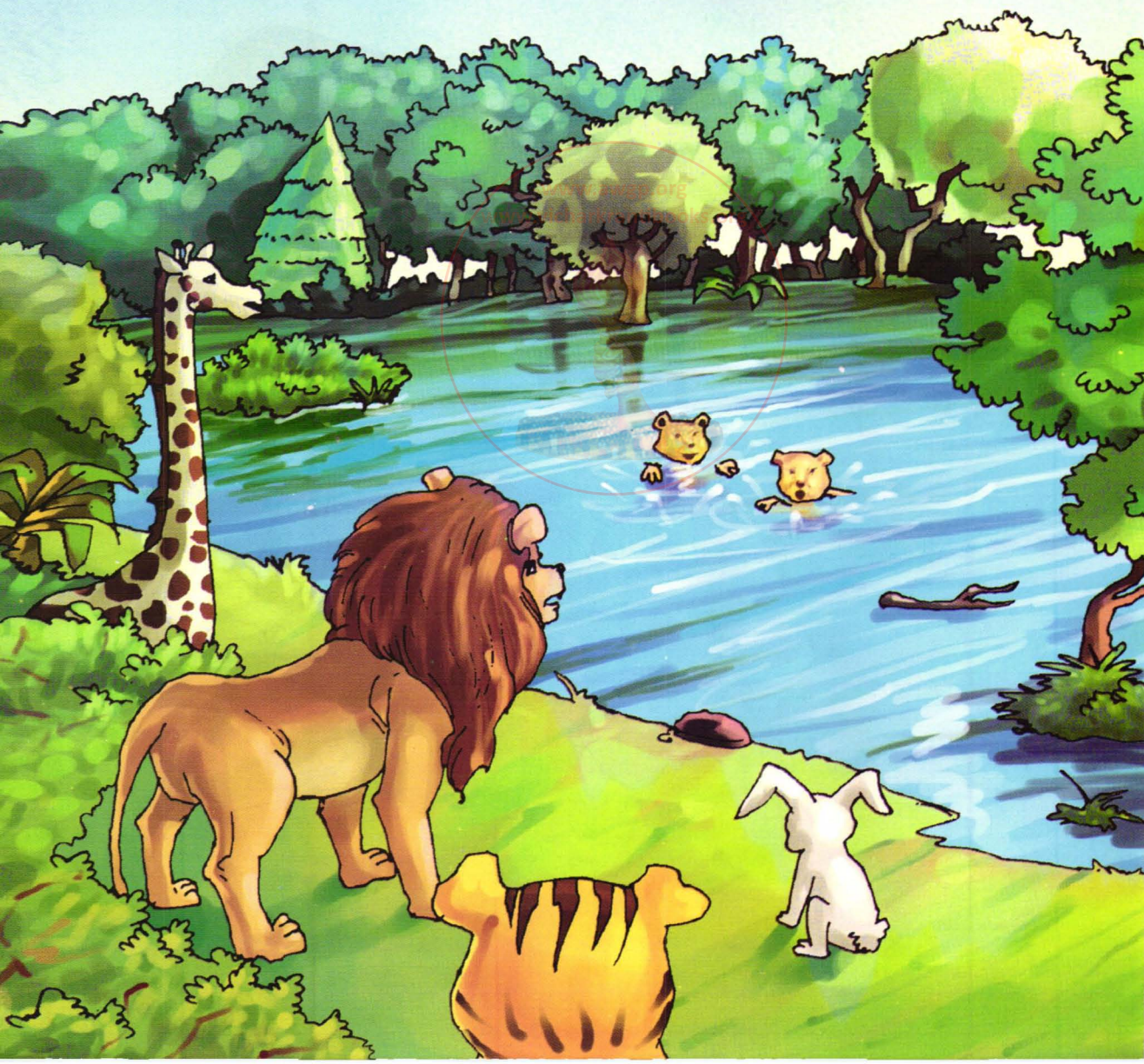

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सलाह न मानी

एक मूर्ख व्यक्ति चूल्हे पर रखकर लकड़ियाँ सुखाया करता था। उसके पड़ोसी ने देखा, तो सलाह दी—"आप ऐसा न किया करें। इससे तो कभी आपके घर में आग भी लग सकती है।" तुम अशुभ बोल रहे हो, कहकर मूर्ख ने मुँह फेर लिया और उसकी सलाह न मानी।

कुछ समय बाद वैसा ही हुआ। लकड़ियाँ जलने लगीं और उसके घर में आग लग गई। हो-हल्ला सुनकर पड़ोसी आए और बड़ी दौड़-धूप के बाद आग बुझाई। शांति हो जाने पर सहायता के उपलक्ष्य में उस मूर्ख ने पड़ोसियों को प्रीतिभोज दिया। उस सज्जन पड़ोसी की खोज की गई तो पाया कि वे पहले की तरह ही किसी अन्य व्यक्ति को समझाने में लगे थे।

उचित सलाह मान लेने में ही व्यक्ति की भलाई है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युगपुरुष बने गांधी जी

स्वराज्य आंदोलन के दिनों की बात है। राजकोट के काठियावाड़ राज्य में प्रजा परिषद् का अधिवेशन हो रहा था। बापू अन्य नेताओं के साथ मंच पर बैठे थे। तभी उनकी दृष्टि दूरी पर बैठे एक वृद्ध पर पड़ी। वे गांधी जी को कुछ जाने-पहचाने से लगे। स्मरण शक्ति पर जरा जोर देने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि ये तो मेरे बचपन के अध्यापक हैं। बापू शीघ्र ही मंच से उतरकर उनके पास गए और प्रणाम करके उनके चरणों के समीप बैठ गए। गुरुजी से उनने परिवार की कुशल क्षेम पूछी। जब काफी समय हो गया, तो गुरुजी ने बापू से कहा—"अब आप मंच पर पधारिए। नेतागण आपकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।" बापू बोले—"नहीं, नहीं मैं यहीं पर ठीक हूँ। अब मैं मंच पर नहीं जाना चाहता। यहीं बैठकर सारा कार्य देखूँगा। आप चिंता न कीजिए।" सभा समाप्त होने पर वे चलने लगे, तो अध्यापक ने गद्‌गद् होकर आशीर्वाद दिया—"जो व्यक्ति तुम जैसा अहंकार रहित हो, महान कहलाने का अधिकारी वही हो सकता है।"

मोहनदास करमचंद गांधी इन्हीं गुणों के कारण बापू, महात्मा, युगपुरुष कहलाए।

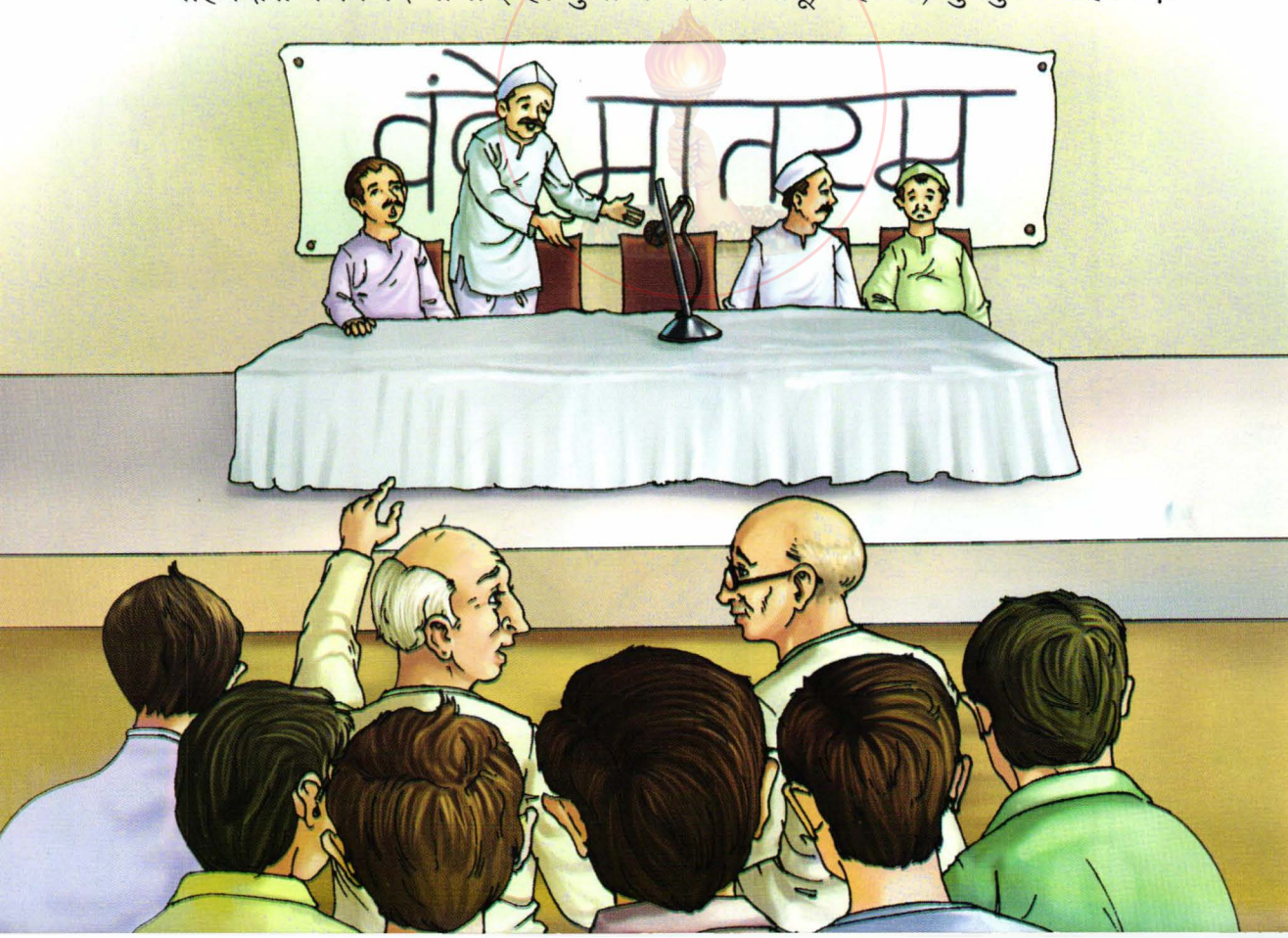

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्ण की दान निष्ठा

राजा कर्ण बहुत बड़े दानी थे उनके पास से कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता था। एक दिन इंद्रदेव ने ब्राह्मण का वेश बनाया और राजा कर्ण के कवच-कुंडल माँगने जा पहुँचे, क्योंकि कवच-कुंडल के रहते हुए वह मारा नहीं जा सकता था। कर्ण ये दोनों महत्त्वपूर्ण अलंकार उन्हें देने लगा, तो वे बोले—"तुम्हें यह भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि इन्हें दे देने के बाद मृत्यु तुम्हें भी अपना ग्रास बना सकती है।"

"ब्राह्मण देवता ! आप निश्चिंत रहिए। मैं यह जानते हुए दान दे रहा हूँ। जो दान और परोपकार का महत्त्व समझता है, उसके लिए प्राणों का मोह कुछ नहीं।" यह कहते हुए कर्ण ने अपने कवच-कुंडल उतारकर दे दिए। इसी आदर्श निष्ठा के आधार पर वे युग के दानवीर कहलाए। दान भी अच्छे कार्य के लिए देना चाहिए तभी भलाई होती है।

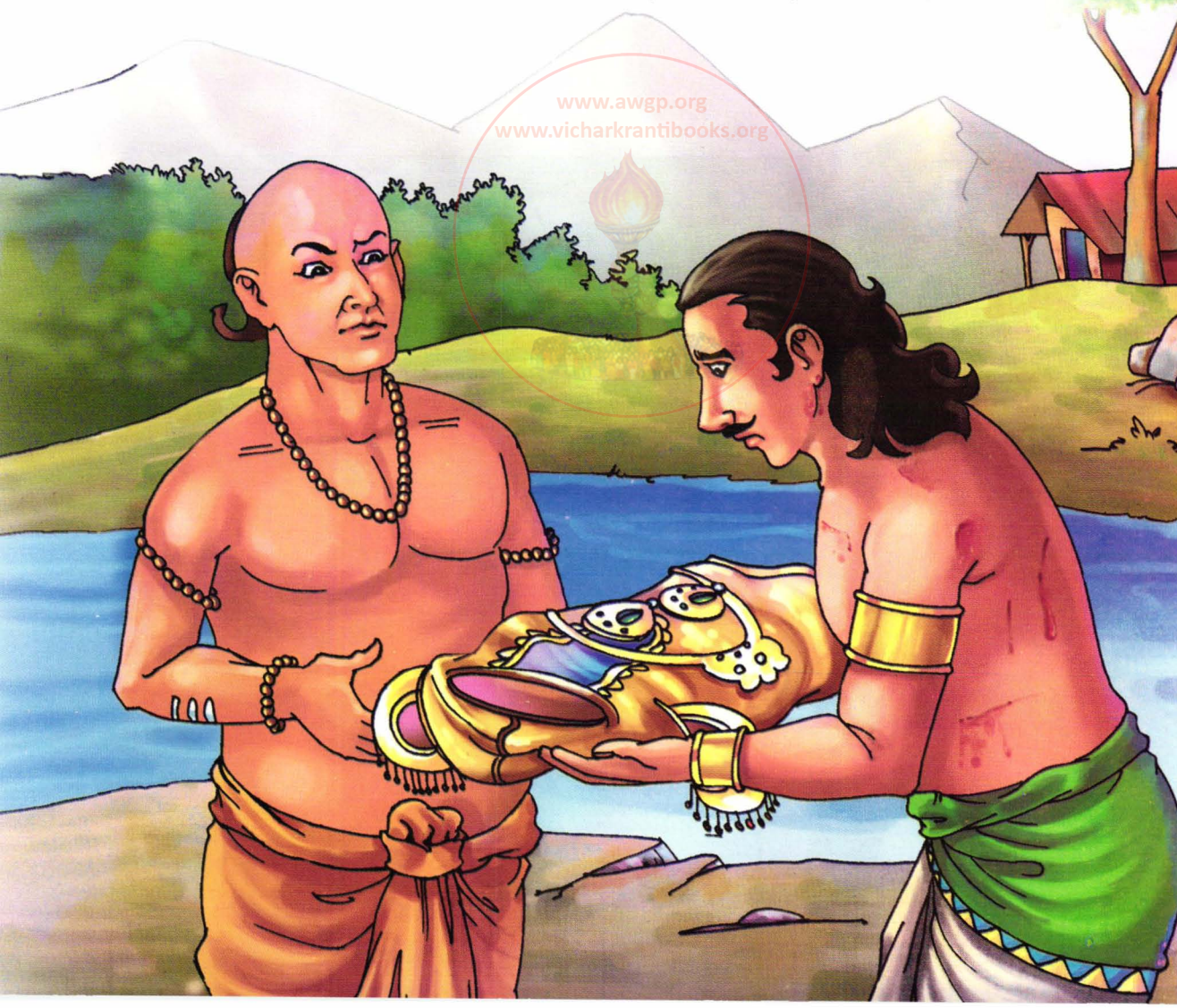

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनोकामना

हनुमान जी के दो भक्त थे। दोनों एकदूसरे का बुरा चाहते थे। एकदूसरे को देखकर जलते थे। एकदूसरे के बारे में बुरा ही सोचते थे। वे एक बार हनुमान जी के मंदिर में गए और दोनों ने ही माँगा कि उसका बुरा हो जाए। दोनों ने ही हनुमान जी को लड्डू चढ़ाए। हनुमान जी ने दोनों को भगा दिया और कहा—"मेरी तरह भगवान जी का काम किया करो, तब तुम्हारी इच्छा पूरी होगी तथा एकदूसरे के बारे में बुरा नहीं, अच्छा सोचोगे तभी मैं तुम्हारी मनोकामना पूरी करूँगा।"

जो हनुमान जी की तरह अपने प्रभु के काम को करते हैं, हनुमान जी भी उनकी ही प्रार्थना सुनते और पूरी करते हैं। गलत काम के लिए की गई प्रार्थना भगवान नहीं सुनते।

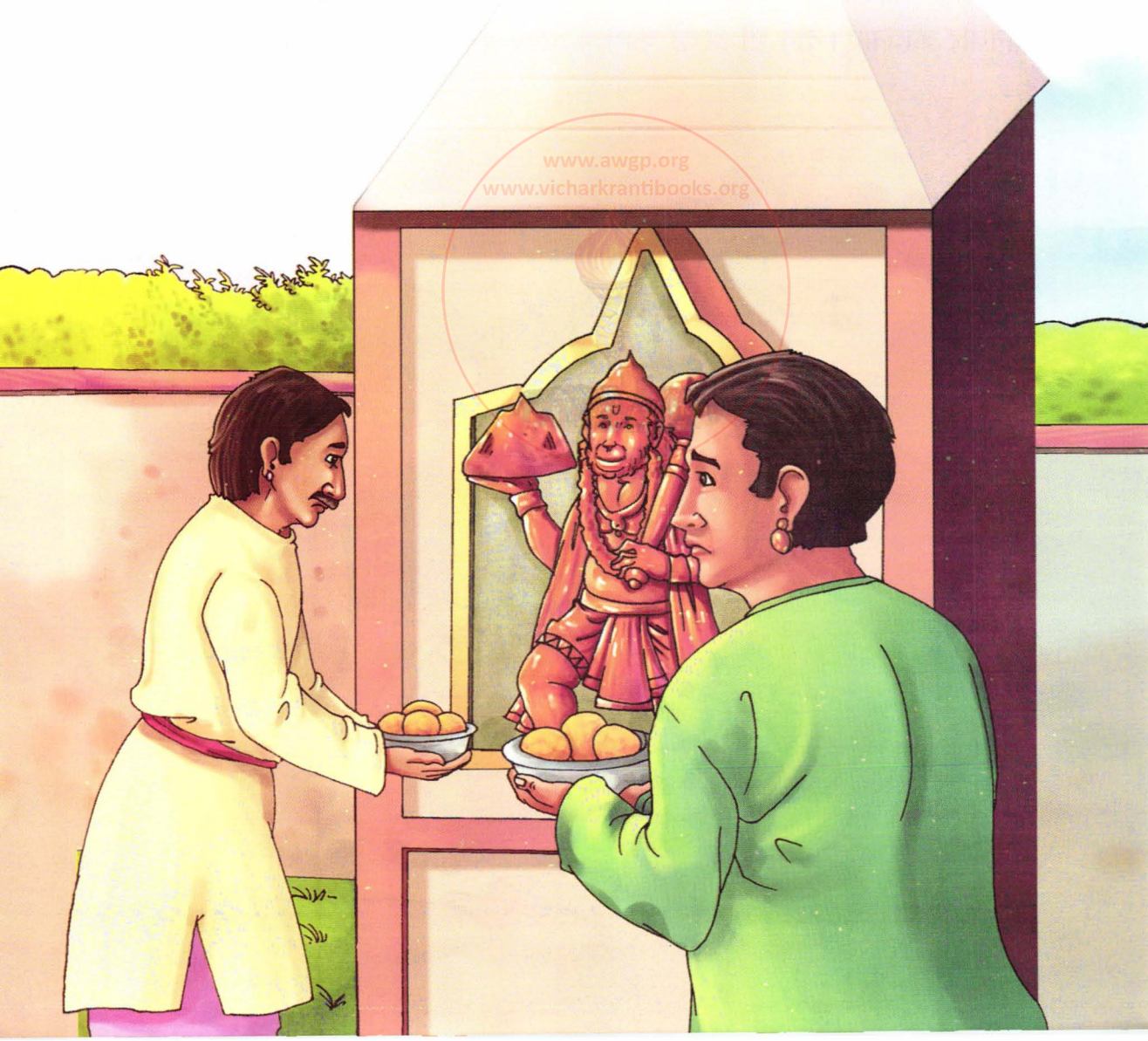

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अगस्त्य की करुणा

एक टिटहरी थी। उसके अंडे एक बार समुद्र बहाकर ले गया। वह टिटहरी अपनी चोंच में मिट्टी भरती और समुद्र में डाल आती। उसके इस लगातार कार्य को देखकर महर्षि अगस्त्य को आश्चर्य हुआ। उन्होंने उससे इसका कारण पूछा तो वह बोली—"महाराज! समुद्र मेरे अंडे बहा ले गया है। इसलिए समुद्र को सुखाने के लिए समुद्र में रेत डाल रही हूँ।" महर्षि अगस्त्य को उस छोटे से पक्षी के प्रयत्न और साहस पर बड़ी प्रसन्नता हुई और उसकी सहायता करने के लिए कटिबद्ध हो गए। महर्षि अगस्त्य ने सारे समुद्र को तीन अंजली भरकर पी लिया और टिटहरी को अपने अंडे मिल गए।

अच्छे कार्य में बड़े भी सहायता अवश्य करते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसा आशीर्वाद नहीं चाहिए

ईश्वरचंद्र विद्यासागर अभाव और निर्धनता के बीच पढ़ते-पढ़ते ५० रुपये मासिक के नौकर हो गए। उनकी सफलता पर उनके अपने संबंधी उन्हें आशीर्वाद देने पहुँचे, बोले—"भगवान की दया से तुम्हारे सारे कष्ट दूर हो गए। आप आराम से रहो और चैन का जीवन बिताओ।" ईश्वरचंद्र जी के नेत्र भर आए, बोले—"आपने यह आशीर्वाद दिया या अभिशाप? जिस अध्यवसाय के बल पर मैं उस भीषण परिस्थिति से निकल कर आया, उसे ही त्यागकर मुझे अकर्मण्य बनने की सलाह दे रहे हैं। आपको कहना तो यह चाहिए था कि जिस गरीबी और अभाव का कष्ट तुमने स्वतः अनुभव किया है, परिस्थितियाँ बदलते ही उसे भुला मत देना। अपने श्रम और सामर्थ्य से अभावग्रस्तों के दुःख दूर करना जिन्हें जीवन का कुछ आभास ही नहीं, वे उपेक्षा बरतें, ऐश में भूले रहें तो भूले रहें मैं कैसे यह अपराध कर सकता हूँ। तथ्य बतलाते हैं कि ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने अपने जीवन में इस सिद्धांत का पूर्ण तत्परता से निर्वाह किया। अगणित अभावग्रस्तों के लिए किसी न किसी रूप में देवदूत की तरह आगे आते रहे। सच्चे अर्थों में उन्होंने परमार्थी जीवन जिया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org